3. क्या लिखूँ? (पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म 27 मई, 1894 को खैरागढ़, छत्तीसगढ़ में हुआ था।

2. पदुमलाल पुन्नालाल किस युग के साहित्यकार थे?

उ०– पदुमलाल पुन्नालाल द्विवेदी युग के साहित्यकार थे।

3. बख्शी जी की प्रथम कहानी किस पत्रिका में प्रकाशित हुई? उसका नाम क्या था?

उ०– बख्शी जी की प्रथम कहानी जबलपुर से निकलने वाली 'हितकारिणी' पत्रिका में प्रकाशित हुई। उसका नाम 'तारिणी' था।

4. बख्शी जी के पिता व पितामह का नाम बताइए।

उ०– बख्शी जी के पिता का नाम उमराव बख्शी व पितामह का नाम पुन्नालाल बख्शी था।

5. 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन बख्शी जी ने किस साहित्यकार के बाद किया?

उ०– 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन बख्शी जी ने महावीर प्रसाद द्विवेदी के बाद किया।

6. बख्शी जी के दो काव्य-संग्रहों के नाम बताइए।

उ०– बख्शी जी के दो काव्य-संग्रह अश्रुदल व शतदल हैं।

7. बख्शी जी ने किस प्रकार की रचनाएँ की हैं?

उ०– बख्शी जी ने मुख्य रूप से आलोचनात्मक व निबंधात्मक रचनाएँ की हैं।

8. बख्शी जी की दो अनूदित रचनाओं के नाम बताइए।

उ०– बख्शी जी की दो अनूदित रचनाएँ– तीर्थस्थल और प्रायश्चित हैं।

9. बख्शी जी ने सरस्वती पत्रिका के अतिरिक्त कौन-सी पत्रिका का संपादन किया?

उ०– बख्शी जी ने सरस्वती पत्रिका के अतिरिक्त मासिक पत्रिका 'छाया' का संपादन किया।

10. पदुमलाल पुन्नालाल जी का निधन कब हुआ था?

उ०– पदुमलाल पुन्नालाल जी का निधन सन् 1971 ई. में हुआ था।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जीवन परिचय देते हुए उनकी कृतियों पर भी प्रकाश डालिए।

उ०– पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, द्विवेदी युग के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। ये एक कुशल आलोचक, हास्य-व्यंग्यकार तथा गंभीर

विचारक थे। बख्शी जी अपने ललित निबंधों के लिए विशेष रूप से स्मरणीय रहेंगे। ये अंग्रेजी कवि वड्र्सवर्थ से बहुत प्रभावित थे, जिनसे प्रेरित होकर इन्होंने स्वच्छंदतावादी कविताएँ लिखी। बख्शी जी की प्रसिद्धि का मुख्य आधार आलोचना और निबंध लेखन है।

जीवन परिचय– पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म 27 मई, 1894 को खैरागढ़, छत्तीसगढ़ में हुआ था। इनके पिता उमराव बख्शी व पितामह पुन्नालाल बख्शी 'खैरागढ़' के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। 14 वीं शताब्दी में बख्शी जी के पूर्वज श्री लक्ष्मीनिधि राजा के साथ मंडला से खैरागढ़ में आए थे ओर तब ये यहीं बस गए। बख्शी जी के पूर्वज फतेह सिंह और उनके पुत्र श्रीमान राजा उमराव सिंह दोनों के शासनकाल में श्री उमराव बख्शी राजकवि थे।

पदुमलाल बख्शी की प्राइमरी की शिक्षा खैरागढ़ में ही हुई। 1911 में यह मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में बैठे। हेडमास्टर एन.ए. गुलाम अली के निर्देशन पर उनके नाम के साथ उनके पितामह का नाम पुन्नालाल लिखा गया। तब से यह अपना पूरा नाम पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी लिखने लगे। मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में यह अनुत्तीर्ण हो गए। उसी वर्ष इन्होंने साहित्य जगत में प्रवेश किया। 1912 में उन्होंने मैट्रिकुलेशन की परीक्षा पास की। उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने बनारस के सेंट्रल हिंदू कॉलेज में प्रवेश लिया। सन् 1913 में लक्ष्मी देवी के साथ उनका विवाह हो गया। 1916 में उन्होंने बी.ए. की उपाधि प्राप्त की तथा फिर उनकी नियुक्ति स्टेट हाईस्कूल राजानंदगाँव में संस्कृत अध्यापक के पद पर हुई। सन् 1971 ई. में हिंदी साहित्य के इस महान आधार स्तंभ का निधन हो गया।

रचनाएँ– बख्शी जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

(अ) काव्य– अश्रुदल, शतदल

(ब) आलोचना– विश्व साहित्य, हिंदी कहानी साहित्य, हिंदी साहित्य विमर्श, हिंदी उपन्यास साहित्य

(स) निबंध-संग्रह– पंच-पात्र, पद्म वन, प्रबंध-पारिजात, कुछ बिखरे पन्ने, कुछ यात्री

(द) कहानी संग्रह– झलमला, अंजलि

(य) अनूदित– तीर्थस्थल, प्रायश्चित, उन्मुक्ति का निबंध

2. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी की भाषा-शैली को सविस्तार समझाइए।

उ०– भाषा-शैली– बख्शी जी की भाषा में जटिलता और रूखापन नहीं है। इनकी भाषा में कहीं-कहीं उर्दू अंग्रेजी के शब्द भी मिलते हैं, जो भाषा को सरल व प्रवाहमय बनाते हैं। इनकी भाषा एक आदर्श भाषा है। बख्शी जी के अनुसार भाषा ऐसी होनी चाहिए, जिसमें सभी प्रकार के विषयों का विवेचन किया जा सके।

बख्शी जी ने अपने कथात्मक निबंधों में भावात्मक शैली का प्रयोग किया है, जिसमें छोटे-छोटे वाक्य हैं, जिनकी सहायता से भावों की अभिव्यंजना बड़ी कुशलता के साथ हुई है। यह शैली सरल व सरस है तथा इसमें चित्रात्मकता, सजीवता व गतिशीलता भी है। इनके आलोचनात्मक निबंधों में गंभीर विषयों को प्रस्तुत करने के लिए व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग हुआ है, जो कहीं-कहीं पर क्लिष्ट भी हो गई है। इनके कुछ निबंधों में विचारात्मक शैली के भी दर्शन होते हैं।

3. 'क्या लिखूँ?' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– 'क्या लिखूँ?' पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी का एक ललित निबंध है। जिसके विषय-प्रतिपादन, प्रस्तुतीकरण एवं भाषा-शैली में इनकी सभी विशेषताएँ सन्निविष्ट हैं। इस निबंध की उत्कृष्टता के दर्शन उस समन्वित रचना-कौशल में होते हैं, जिसके अंतर्गत लेखक ने दो विषयों पर निबंध की विषय सामग्री करने आदि का संकेत ही नहीं किया है, वरन् संक्षिप्त रूप में उन्हें प्रस्तुत भी कर दिया है।

बख्शी जी के अनुसार आज उनके लिए लेखन कार्य करना अनिवार्य है। उन्हें अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबंधकार ए. जी. गार्डिनर का कथन याद आ गया कि लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है, जब मनुष्य लेखन के लिए उद्धत होता है। उस समय उसे विषय के बारे में ध्यान ही नहीं रहता है। जिस प्रकार हैट को टाँगने के लिए किसी भी खूँटी का प्रयोग किया जा सकता है, उसी प्रकार मन के भावों को किसी भी विषय पर प्रस्तुत किया जा सकता है। गार्डिनर साहब का यह कथन सर्वथा उपयुक्त है, परंतु लेखक बख्शी जी को लेखन कार्य के लिए कड़ा परिश्रम करना पड़ता है। लेखक को नमिता ने 'दूर के ढोल सुहावने' व अमिता ने 'समाज सुधार' पर निबंध लिखने को दिया, जिस पर आदर्श निबंध लिखकर उन्हें निबंध-रचना का रहस्य समझाना था। इसके लिए लेखक ने निबंधशास्त्र के कई आचार्यों की रचनाएँ देखीं। एक विद्वान का कथन था कि निबंध छोटा होना चाहिए क्योंकि यह बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है। परंतु निबंध के दो अंग सामग्री और

शैली है। इसलिए लेखक को सामग्री एकत्र करने के लिए मनन करना होगा। लेखक के पास 'दूर के ढोल सुहावने' पर निबंध लिखने के लिए पर्याप्त समय नहीं था। विद्वानों के अनुरूप किसी भी विषय पर निबंध लिखने से पहले उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए। जिसमें लेखक कठिनाई का अनुभव करता है। जिस प्रकार ए. जी. गार्डिनर को अपने लेखों का शीर्षक बनाने में कठिनाई होती थी। इसी प्रकार शेक्सपीयर को भी नाटक लिखने में उतनी कठिनाई नहीं होती थी जितनी कि उनके नामकरण से होती थी, इसलिए उन्होंने अपने नाटक का नाम 'जैसा तुम चाहो' रख दिया। लेखक को दूसरा प्रमुख कार्य निबंध की शैली का निश्चय करना था, जिससे अमिता और नमिता यह न समझें कि यह निबंध मोटी अक्ल वालों के लिए लिखा गया है। अंग्रेजी के निबंधकार मानटेन ने जो कुछ स्वयं देखा, सुना, अनुभव किया उसी को अपने निबंधों में लिपिबद्ध कर दिया। जो कि उनके मन की स्वच्छंद रचनाएँ थी। लेखक ने यहाँ अमीर खुसरो की प्रतिभा का उदाहरण दिया है कि एक बार वे एक कुएँ पर गए जहाँ चार औरतें पानी भर रही थी। पानी माँगने पर एक ने खीर, दूसरी ने चखें, तीसरी ने कुत्ते व चौथी ने ढोल पर कविता सुनाने की इच्छा प्रकट की। अमीर खुसरो विद्वान थे। उन्होंने एक ही पद्य में चारों की इच्छा पूरी कर दी—

खीर पकाई जतन से, चर्खा दिया चला।
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा।

लेखक कहता है मैं उनके जितना प्रतिभाशाली नहीं हूँ कि एक ही निबंध में दोनों विषयों का समावेश कर दूँ। लेखक कहता है कि दूर के ढोल सुहावने होते हैं क्योंकि जब ढोल पास में बजता है तो लोगों के कानों को पीड़ा होती है, परंतु जब ढोल की ध्वनि दूर से आती है तो वही मधुर ध्वनि बनकर लोगों के मन को आनंदित करती है और मनुष्य के मन में विभिन्न कल्पनाएँ जन्म लेने लगती हैं। लेखक के अनुसार जिसने अभी तक जीवन-संघर्षों का सामना नहीं किया है उन्हें भविष्य सुंदर लगता है पर जो इससे गुजर चुके हैं उन्हें अतीत की स्मृतियों में ही रहना अच्छा लगता है। दोनों ही अपने वर्तमान से संतुष्ट नहीं होते, युवा, भविष्य को वर्तमान व वृद्ध, अतीत को वर्तमान बनाना चाहते हैं। जिस कारण वर्तमान सदैव सुधारों का काल बना रहता है। मनुष्य के इतिहास में हमेशा सुधारों की आवश्यकता हुई है। कितने ही सुधारक जैसे— बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य आदि हुए। अत: न दोषों का अंत होता है और न सुधारों का। जो अतीत में सुधार थे वे भविष्य में दोष बन जाते हैं। हिंदी में भी प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है, परंतु वह भी समय के साथ-साथ अतीत का स्मारक होता जाता है। आज जो युवा हैं वे ही कल वृद्ध होकर अतीत को याद करेंगे और नए युवा वर्ग का जन्म होगा, जो भविष्य की सुखद कल्पना करेगा। दोनों ही सुखद कल्पनाओं में रहते हैं। क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. अंग्रेजी के प्रसिद्ध ..... विषय नहीं।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्य खंड' के 'पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी' द्वारा लिखित 'क्या लिखूँ?' निबंध से उद्धृत है।

प्रसंग– लेखक बख्शी जी ने यहाँ लेखन के लिए विशेष स्थिति व दशाओं का वर्णन करते हुए, लेखन के लिए उपयुक्त विषय वस्तु के चयन की आवश्यकता न होने का वर्णन किया है।

व्याख्या– लेखन के लिए आवश्यक मनोभावों का उल्लेख करते हुए अंग्रेजी भाषा के सुप्रसिद्ध निबंधकार ए. जी. गार्डिनर ने यह स्पष्ट किया है कि लेखन के लिए एक विशेष प्रकार की मानसिक स्थिति का होना आवश्यक है। इस मानसिक स्थिति के संदर्भ में वे लिखते हैं कि जब मन उल्लास अथवा आनंद से भर उठे, हृदय में स्फूर्ति अर्थात् ताजगी के भाव का अनुभव होने लगे तथा मस्तिष्क में एक दबाव सा उत्पन्न हो जाए तो लेखक स्वत: ही लिखने के लिए बाध्य हो जाता है। मनोभावों के अतिरेक की इस स्थिति में वह स्वत: ही कुछ न कुछ लिखने को आतुर हो उठता है और उसकी लेखनी मनोभावों को अभिव्यक्त करने लगती है। इस प्रकार की मनोदशा में लेखक के लिए विषय और शैली का कोई महत्व नहीं होता, उसका उद्देश्य तो मात्र अपने मन के विचारों एवं भावों को व्यक्त करना ही होता है। मन के विचारों एवं भावों पर आधारित कोई भी विषय हो, वह उसी विषय पर तब तक लिखता रहता है जब तक उसके हृदय में उत्पन्न भावों का आवेग शांत नहीं हो जाता। तात्पर्य यह है कि किसी भी प्रकार के लेख लिखने के लिए सर्वप्रथम कुछ विशिष्ट प्रकार के मनोभावों का उत्पन्न होना नितांत आवश्यक होता है। विशिष्ट मनोभावों से पूर्ण मनोदशा के अभाव में कुछ भी लिख पाना सम्भव नहीं होता है।

लेखक यहाँ पर हैट व खूँटी के माध्यम से बताता है कि जैसे हैट को टाँगने के लिए किसी विशेष खूँटी की आवश्यकता नहीं

होती है वह तो किसी भी खूँटी पर टाँग दिया जाता है वैसे ही अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए कोई विशेष विषय ही आवश्यक नहीं है, वह तो किसी भी विषय पर व्यक्त किए जा सकते हैं। प्रमुख वस्तु तो हैट है जिसे टाँगना है, खूँटी नहीं। इसी तरह यथार्थ वस्तु तो मन के भाव ही हैं, जिन्हें व्यक्त करना है, विषय नहीं है, जिस पर विचार व्यक्त करने हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– क्या लिखूँ? **लेखक–** पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

(ब) 'लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है' से लेखक का क्या आशय है ?

उ०– यहाँ लेखक का आशय उस मनोस्थिति से है जब लेखक के मन में लेखन के लिए उमंग उठती है, ताजगी आती है, मस्तिष्क में विचारों का आवेग उमड़ जाता है उस स्थिति में लेखक को लेखन कार्य करना ही पड़ता है।

(स) 'हैट' और 'खूँटी' का उदाहरण इस गद्यांश में क्यों दिया गया है?

उ०– 'हैट' और 'खूँटी' के माध्यम से लेखक ने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए किसी विशेष विषय की अनावश्यकता पर प्रकाश डाला है। जिस प्रकार हैट को किसी भी खूँटी पर टांग सकते हैं, उसी प्रकार मनोभावों को भी किसी विषय पर प्रस्तुत किया जा सकता है।

(द) गार्डिनर के अनुसार लेखक को निबंध कब लिखना पड़ता है?

उ०– गार्डिनर के अनुसार एक विशेष मानसिक स्थिति में जब मन में उमंग, हृदय में स्फूर्ति और मस्तिष्क में आवेग उत्पन्न होता है, तब लेखक को निबंध लिखना ही पड़ता है।

2. मुझे तो सोचना ..... रहस्य समझाना पड़ेगा।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने एक निबंध को लिखने के लिए अपनी स्थिति का वर्णन किया है कि उन्हें इसके लिए कड़ा परिश्रम करना पड़ता है। जिससे कि वह सार्थक सिद्ध हो सके।

व्याख्या– लेखक बख्शी जी ने यहाँ अपनी मनोस्थिति का वर्णन करते हुए कहा है कि किसी निबंध को लिखने के लिए उन्हें अधिक सोच विचार करना पड़ता है, चिंता करनी पड़ती है तथा कड़ा परिश्रम करना पड़ता है। तब वे एक निबंध के लेखन का कार्य कर पाते हैं और आज उन्हें विशेष रूप से परिश्रम करना पड़ेगा क्योंकि उन्हें कोई साधारण निबंध नहीं लिखना है बल्कि अमिता और नमिता के लिए अलग-अलग विषयों पर निबंध लिखना है।

लेखक को अमिता और नमिता ने निबंध लिखने के लिए विषय दिए हैं। नमिता ने लेखक को 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' और अमिता ने 'समाज सुधार' विषय पर निबंध लिखने के लिए दिया है। इन दोनों के द्वारा दिए गए ये विषय परीक्षाओं में भी आ चुके हैं और लेखक उन दोनों विषयों पर आदर्श निबंध लिखकर उन दोनों को निबंध लेखन का रहस्य समझाना चाहता है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– क्या लिखूँ? **लेखक–** पदुमलाल पुन्नालाल

(ब) गद्यांश के अनुसार बताइए कि लेखक को विशेष परिश्रम क्यों करना पड़ेगा?

उ०– गद्यांश के अनुसार लेखक को विशेष परिश्रम इसलिए करना पड़ेगा क्योंकि उसे साधारण निबंध की अपेक्षा एक आदर्श निबंध लिखना होगा।

(स) लेखक को निबंध किसके लिए लिखना था?

उ०– लेखक को नमिता और अमिता के लिए निबंध लिखना था।

(द) दोनों निबंधों के विषय क्या थे?

उ०– दोनों निबंधों के विषय 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' और 'समाज सुधार' थे।

3. एक विद्वान ..... मनन करना चाहिए।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने निबंध के प्रधान अंगों-सामग्री व शैली पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या– लेखक बख्शी जी ने निबंध लिखने से पहले निबंधशास्त्र के कई आचार्यों की रचनाओं का अध्ययन किया। जिनमें विद्वानों के मत अलग-अलग हैं। एक विद्वान का मत है कि निबंध छोटा होना चाहिए। छोटे निबंध बड़े निबंधों की अपेक्षा अधिक अच्छे होते हैं क्योंकि छोटे निबंधों में रचना की सुंदरता बनी रहती है जो कि बड़े निबंधों में नहीं रह पाती है। इन विद्वान के छोटे निबंध से संबंधित कथन को मानने में ही लेखक अपना लाभ समझता है क्योंकि इसको मानने के कारण लेखक को छोटा निबंध ही लिखना होगा, जिसमें वह कम शब्दों में अपने विचार प्रस्तुत कर सकता है। परंतु लेखक के सामने सबसे बड़ी समस्या निबंध लिखने की है। क्योंकि निबंधशास्त्र के उन्हीं आचार्य ने निबंध के दो प्रधान अंगों की व्याख्या की है—सामग्री और शैली। लेखक को पहले सामग्री एकत्र करनी होगी फिर विचारों के समूह को इकट्ठा करना होगा। जिसके लिए उसे गहन विचार करना पड़ेगा।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– क्या लिखूँ? **लेखक–** पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

(ब) निबंध के दो प्रधान अंग कौन-से हैं?

उ०– निबंध के दो प्रधान अंग— सामग्री और शैली हैं।

(स) विद्वान के कथन के अनुसार छोटा निबंध बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा कैसे होता है?

उ०– विद्वान के अनुसार छोटा निबंध बड़े निबंध की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है क्योंकि बड़े निबंध में रचना की सुंदरता नहीं बनी रहती है।

(द) लेखक परेशान क्यों है?

उ०– लेखक इसलिए परेशान हैं, क्योंकि लेखक को निबंध लिखने के लिए सामग्री एकत्र करनी होगी जिसके लिए उसे विचारों के समूह को इकट्ठा करना होगा।

4. विद्वानों का कथन ..... तैयार न होगी।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने निबंध लेखन के लिए विभिन्न विद्वानों के विचार व्यक्त किए हैं और ए. जी. गार्डिनर और शेक्सपीयर जैसे महान लेखकों के माध्यम से लेखकों की मनोस्थिति का वर्णन किया है।

व्याख्या– लेखक ने विभिन्न विद्वानों के कथनों के माध्यम से निबंध लेखन के लिए आवश्यक सामग्री व शैली का वर्णन करते हुए कहा है कि विद्वानों के अनुसार निबंध को लिखने से पहले उसका रूपरेखा अवश्य बना लेनी चाहिए। जिससेकि निबंध क्रमबद्ध हो जाए। इसलिए लेखक भी 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' की रूपरेखा तैयार करना चाहता है परंतु वह यह नहीं समझ पाता कि इस विषय की रूपरेखा किस प्रकार की होनी चाहिए। लेखक निबंध लिखने के बाद तो उसका सारांश लिख सकता है परंतु निबंध लिखने से पहले वह कुछ शब्दों में उसका सारांश किस प्रकार लिखे, यह उसे समझ में नहीं आता है। लेखक के मन में यह प्रश्न भी उठता है कि क्या हिंदी के सभी महान् विद्वान लेखक अपने निबंधों को लिखने से पहले उसकी रूपरेखा बना लेते थे? लेखक कहता है कि महान निबंधकार ए. जी. गार्डिनर को भी अपने निबंधों के लेखन के समय उनके उपयुक्त शीर्षक के चुनाव में ही सबसे अधिक परेशानी का सामना करना पड़ता था। उन्होंने लिखा भी है कि मैं तो केवल लेख लिखता हूँ और शीर्षक बनाने का अर्थात् लेख को उचित शीर्षक का दायित्व मैं अपने मित्र पर छोड़ देता हूँ। उन्होंने यह भी बताया है कि शेक्सपीयर को भी नाटकों को लिखने में उतनी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा जितना कि उनके नामकरण करने में। तभी तो शेक्सपीयर ने घबराकर अपने नाटक का नाम 'जैसा तुम चाहो' रख दिया था, इसलिए लेखक के अनुसार उससे भी इस शीर्षक 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' की रूपरेखा तैयार नहीं हो पाएगी।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– क्या लिखूँ **लेखक–** पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

(ब) शेक्सपीयर के बारे में ए. जी. गार्डिनर ने क्या लिखा है?

उ०– शेक्सपीयर के बारे में ए. जी. गार्डिनर ने लिखा कि शेक्सपीयर को भी उन्हीं की भांति नाटकों के लेखन से अधिक नाटकों के नामकरण में कठिनाई होती थी।

(स) विज्ञों के अनुसार निबंध लिखने से पूर्व क्या करना चाहिए?

उ०– विज्ञों के अनुसार निबंध लिखने से पूर्व उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए।

(द) ए. जी. गार्डिनर को किस बात में कठिनाई होती है?

उ०– ए. जी. गार्डिनर को लेख लिखने से अधिक उसके शीर्षक को लिखने में कठिनाई होती है।

(य) लेखक ने रूपरेखा तैयार करने में असमर्थता क्यों जताई?

उ०– लेखक ने रूपरेखा तैयार करने में असमर्थता इसलिए जताई क्योंकि लेखक अपने विषय के अनुरूप निबंध लिखने से पहले उसका सार लिखने में असमर्थ था।

5. दूर के ढोल सुहावने ..... मधुर बन जाता है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं कि क्यों यह कहावत चरितार्थ होती है।

व्याख्या– लेखक ने इन पंक्तियों में एक प्रचलित मुहावरे पर अपने दृष्टिकोण को व्यक्त किया है। वह कहता है कि दूर के ढोल सुहावने इसलिए लगते हैं, क्योंकि ढोल की आवाज की कर्कशता दूर तक नहीं पहुँचती। जिस समय यह आवाज पास बैठे लोगों के कानों के परदों को फाड़ती हुई महसूस होती है,उसी समय दूर संध्या के समय किसी नदी के किनारे पर बैठे किसी व्यक्ति को यह अत्यंत मधुर लगती है। इस मधुरता का मनोवैज्ञानिक कारण बताते हुए लेखक कहता है कि वस्तुत: जो व्यक्ति दूर से ढोल की आवाज को सुनता है, उसके मानसपटल पर इस आवाज के कारण किसी विवाहोत्सव का चित्र अंकित हो जाता है और वह कोलाहल से पूर्ण घर में बैठी हुई किसी लज्जाशील नववधू की कल्पना कर लेता है। उस नववधू की कल्पना में उसके प्रेम, उल्लास, संकोच, आशंका आदि के भाव श्रोता के हृदय में मूर्त रूप धारण करने लगते हैं और ढोल की कर्कश आवाज में उसे मधुरता का रस प्राप्त होने लगता है।

लेखक कहता है कि यदि हम उस विवाहोत्सव में सम्मिलित लोगों को देखें तो उस कानों को बेधते ढोलों के पास उपस्थित लोगों का मन भी उल्लासमय दृष्टिगत होता है। वहाँ किसी को भी ढोलों की वह कर्कश ध्वनि अरुचिकर अर्थात् कटु नहीं लगती; क्योंकि ढोल की उस ध्वनि में उस उत्सव के आनंद का शोर, मन की प्रसन्नता और पारस्परिक प्रेम की स्वर-लहरियाँ भी मिली होती हैं। ये सभी चीजें मिलकर ढोल के पास स्थित लोगों को भी ढोल की ध्वनि की कर्कशता का अनुभव नहीं होने देती। वह उनमें उत्साह, उल्लास और आनंद का संचारकर थिरकने पर विवश कर देती है। दूर स्थित लोगों के लिए तो वह चलचित्र की भाँति उनके मानसपटल पर उस उत्सव के आनंद, उत्साह और उल्लास के चित्रों को सजीव कर ही देती है, तब वे भी समीपस्थ लोगों की भाँति ही आनंद और स्फूर्ति से भर उठते हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– क्या लिखूँ? **लेखक–** पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

(ब) नदी के तट पर बैठा कोई व्यक्ति दूर बजते ढोल को सुनकर क्या कल्पना कर लेता है?

उ०– नदी के तट पर बैठा कोई व्यक्ति जब दूर बजते ढोल की आवाज सुनता है तो वह किसी विवाहोत्सव की कल्पना कर लेता है। वह शोरगुल से पूर्ण घर में बैठी किसी लज्जाशील नववधू की कल्पना करता है।

(स) दूर के ढोल सुहावने क्यों होते हैं?

उ०– दूर के ढोल सुहावने इसलिए होते हैं क्योंकि दूर स्थित वस्तुओं अथवा व्यक्तियों के दोषों को ज्ञान न होने के कारण वे अच्छे प्रतीत होते हैं।

(द) लोगों के कान के पर्दे क्यों फटते हैं?

उ०– लोगों के कान के पर्दे इसलिए फटते हैं क्योंकि ढोल की कर्कश आवाज लोगों को परेशान करती है।

(य) ढोल की कर्कशता दूरस्थ लोगों को मधुर क्यों लगती है?

उ०– ढोल की कर्कशता दूरस्थ लोगों को इसलिए मधुर लगती है क्योंकि ढोल की आवाज की कर्कशता दूर तक नहीं पहुँच पाती है तथा वह उस ध्वनि को सुनकर अपने हृदय में किसी विवाहोत्सव का चित्र अंकित कर लेता है।

6. हिंदी में प्रगतिशील ..... ढोल सुहावने होते हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने प्रगतिशील साहित्य के विषय में बताया है कि निर्माता अपने साहित्य को भविष्य का गौरव मानता है परंतु समय के साथ-साथ वह पुराना होता जाता है। आज के तरुण कल वृद्ध होकर अतीत के गौरव का सपना देखते हैं।

व्याख्या– हिंदी साहित्य में आजकल प्रगतिशील साहित्य का सृजन किया जा रहा है। प्रगतिशील साहित्यकार यह समझ रहे हैं कि उनके द्वारा जिस साहित्य का सृजन किया जा रहा है, उसमें भविष्य का गौरव निहित है, किंतु कुछ समय बाद उनके द्वारा रचित प्रगतिशील साहित्य भी अतीत की वस्तु बन जाएगा जैसे छायावादी काव्य वर्तमान में अतीत का विषय बन गया है। आज का साहित्यकार एक तरुण की तरह भविष्य के गौरव को निहारना चाहता है, किंतु जिस प्रकार एक तरुण समय के साथ-साथ वृद्धावस्था में पहुँच जाता है, उसी प्रकार साहित्य भी सदैव आधुनिक नहीं रहता। इसी प्रकार जो तरुण आज भविष्य के गौरव की कल्पना में खोए हुए हैं, वे भी वृद्ध होकर निश्चित रूप से अतीत की स्मृतियों में खो जाएँगे। तरुणों का स्थान भविष्य में नई पीढ़ी के बच्चे ग्रहण करेंगे और तरुण भी बूढ़े होकर अतीत की स्मृतियों में खोए रहेंगे। युवाओं के भविष्य के स्वप्न जब तक साकार होंगे, तब तक वे भी वृद्ध हो जाएँगे। इस प्रकार युवा और वृद्ध दोनों ही केवल सुनहले स्वप्नों को देखकर प्रसन्न होते हैं। इस दृष्टि से यह कहावत कि 'दूर के ढोल सुहावने' होते हैं, उचित ही है। तरुण जब तक वृद्धावस्था को नहीं पहुँचाता, तब तक भविष्य के गौरव की चिंता करता है और जब वह स्वयं वृद्ध हो जाता है, तब वह अतीत के स्वप्नों में खो जाता है। यह समय का चक्र है। एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी का स्थान ग्रहण करती रहती है, परंतु दोनों के सोचने के ढंगों में अंतर होते हुए भी कुछ-न-कुछ समानता अवश्य रहती है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– क्या लिखूँ? **लेखक–** पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

(ब) हिंदी में किसका निर्माण हो रहा है?

उ०– हिंदी में प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है।

(स) हिंदी के निर्माता क्या समझ रहे हैं?

उ०– हिंदी के प्रगतिशील साहित्य के निर्माता समझ रहे हैं कि उनके द्वारा जिस साहित्य का सृजन किया जा रहा है, उसमें भविष्य का गौरव निहित है।

(द) तरुण वृद्ध होकर किसका स्वप्न देखेंगे?

उ०– तरुण वृद्ध होकर अतीत के स्वप्न देखेंगे।

(य) 'दोनों के ही स्वप्न सुखद होते हैं' से लेखक का क्या आशय है?

उ०– यहाँ लेखक का आशय है कि युवाओं को भविष्य के स्वप्न सुखद लगते हैं तथा वृद्धों को अपने अतीत के स्वप्न सुखद लगते हैं। इस प्रकार दोनों ही अपने सुनहले स्वप्नों को देखकर प्रसन्न होते हैं।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. पदुमलाल बख्शी जी का जन्म कब हुआ था?

(अ) 1902 ई. (ब) 1878 ई.

(स) **1894 ई.** (द) 1896 ई.

2. बख्शी जी ने किस पत्रिका का संपादन किया था?

(अ) **सरस्वती** (ब) कामायनी

(स) कादंबिनी (द) त्रिवेणी

3. बख्शी जी को हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा किस उपाधि से अलंकृत किया गया?

(अ) **साहित्य वाचस्पति** (ब) मंगलाप्रसाद

(स) साहित्य विशारद (द) इनमें से कोई नहीं

4. निम्न में से बख्शी जी की कृति कौन-सी है?

(अ) **झलमला** (ब) चंद्रगुप्त

(स) आचरण की दिशा (द) गोदान

(ङ) व्याकरण एवं रचना बोध

1. निम्नलिखित शब्दों का समास-विग्रह करते हुए समास का नाम भी लिखिए–

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**समास का नाम**
समाज–सुधार	समाज का सुधार	संबंध तत्पुरुष समास
विवाहोत्सव	विवाह के लिए उत्सव	संप्रदान तत्पुरुष समास
नववधू	नई वधू	कर्मधारय समास
बाल्यावस्था	बचपन की अवस्था	संबंध तत्पुरुष समास

2. 'दुर' व 'अभि' उपसर्गों का प्रयोग करते हुए दो-दो शब्द बनाइए।

उ०– दुर – दुर्गम, दुर्दशा।

अभि – अभिमान, अभिभावक।

3. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

संधि शब्द	**संधि-विच्छेद**
विवाहोत्सव	विवाह + उत्सव
पुस्तकालय	पुस्तक + आलय
तरुणावस्था	तरुण + अवस्था
समीपस्थ	समीप + स्थ
दुर्बोध	दुः + बोध

4. 'ता' तथा 'वान' प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए दो-दो शब्द बनाइए।

उ०– ता – लघुता, प्रभुता।

वान – गुणवान, धनवान।

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।